RESEARCH INQUIRY
(An International Peer Reviewed Multidisciplinary Referred Research Journal)
Impact Factor :
ISSN

अमरकांत की कथा–शैली और उनके साहित्य में भारतीय जीवन–दृष्टि

डॉ०सृष्टि कुशवाहा
सहायक आचार्य 'हिन्दी'
मदन मोहन मालवीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कालाकांकर प्रतापगढ़

सारांश : अमरकांत हिंदी कथा साहित्य के ऐसे महत्वपूर्ण लेखक हैं जिनकी रचनाओं में भारतीय जीवन की सटीक और संवेदनशील चित्रण है। वे अपनी कहानियों में साधारण शब्दों से गहरी बात कहते हैं, न कि कृत्रिम भाषा या जटिल शिल्प। यही उनका कथा–शिल्प का सबसे बड़ा गुण है। अमरकान्त की कहानियों में ग्रामीण और निम्न–मध्यमवर्गीय जीवन का मूल स्वर भारतीयता है। उनकी कथाओं का मुख्य विषय गरीबी, बेरोजगारी, पारिवारिक संबंध, नैतिक संघर्ष और मानवीय संवेदनाएँ हैं।उनके पात्र साधारण हैं, लेकिन बहुत जीवंत हैं, और वे भारतीय समाज की वास्तविक स्थिति को दिखाते हैं। ''दोपहर का भोजन'' और ''जीवन और जोंक'' जैसी कहानियाँ भारतीय समाज की विडंबनाओं को आसानी से दिखाती हैं। उनकी कहानियों में स्पष्ट रूप से करुणा, मानवीय भावना और सामाजिक दायित्व दिखाई देते हैं। अमरकान्त की कहानी मानवीय मूल्यों, संघर्ष और सहिष्णुता को उजागर करती है। इसलिए वे हिंदी कहानी परंपरा में विशिष्ट हैं।
प्रमुख शब्द– संवेदनशील ,बेरोजगारी नैतिक संघर्ष, विडंबनाओं, सहिष्णुता।

प्रस्तावना

हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचन्द का विराट व्यक्तित्व अविस्मरणीय है। उन्होंने कथा सहित्य को जो ऊँचाईयाँ प्रदान की हैं उस पर भव्य इमारत का निर्माण करना किसी भी अन्य लेखक के लिए वास्तव में एक बहुत बड़ी चुनौती थी। आजादी के बाद कविता की तरह कथा साहित्य में भी एक से बढ़कर एक आन्दोलनों का दौर चला। इसी बीच एक ऐसा कथाकार आया जिसने न सिर्फ अपना उत्तरदायित्व संभाला बल्कि प्रेमचन्द की अमर विरासत को संजोने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी उस महान कथाकर का नाम है –''अमरकान्त''।[1]

अमरकान्त वो नाम है जिसने कभी भी अपनी जिम्मेदारियों से मुंह नहीं मोड़ा। उनकी रचनाओं में निम्न मध्यम वर्ग की उत्कृष्ट जिजीविषा का प्रतिबिम्ब उभर कर सामने आता है। कथावस्तु से लेकर शिल्प विधान तक अमरकान्त जी अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ते चले जाते हैं। इनकी कहानियों में भारतीय दृष्टिकोण अपने पूरे तेज के साथ उजागर होता है। ''भारतीयता की बात साहित्य और कला के सन्दर्भ में असंगत सी लगती है, किन्तु अमरकान्त जैसे कथाकार (जैसे प्रेमचन्द्र) इस बात के लिए कभी–कभी मजबूर करते हैं कि ये समझा जाए कि भारतीयता का सन्दर्भ कला और उसकी समीक्षा दोनों के लिए कितना महत्वपूर्ण है। क्या कारण है कि नयी कहानी साठोत्तरी कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, समानान्तर कहानी जैसे आन्दोलन आते जाते रहते हैं और उनसे जुड़े कथाकार भी समुद्र के झाग की तरह समाप्त हो जाते हैं, किन्तु अमरकान्त जैसे कथाकार जो कभी इन जय यात्राओं में शामिल नहीं रहे कोई रुचि न थी इन्होंने सदा ही वस्तुनिष्ठ ढ़ग से संतुलित कहानियाँ लिखी। शिल्प विधान के प्रति कोई विशेष आग्रह नहीं दिखायी देता इनकी ओर से। एक सीधा सादा जीवन इनकी कहानियों में फलता फूलता दिखाई देता है। उन्होंने अपने चारों ओर जिस यथार्थ को देखा परखा, जिसे समझा उसे बड़ी ही साफगोई से और पूर्ण संवेदना के साथ ऐसे ढंग से अभिव्यक्त करने की चेष्टा में कुछ ऐसी रचना कर देते थे जो पाठक समुदाय के बोध का अभिन्न हिस्सा बन जाती है। उन्होंने अपनी कहानियों के लिए जिन पात्रों का चयन किया वो हमारे ही परिवेश के हैं, जाने पहचाने हैं इसलिए हमारे लिए वो अपरिचित नहीं। अमरकान्त की कथाओं में पात्रों की असफलताओं एवं विडम्बनाओं के प्रति जहाँ एक ओर व्यंग्यात्मक कटाक्ष दिखायी देता है वहीं गहरी मानवीय करुणा भी अभिव्यक्ति पाकर अपनी पूरी बनावट के साथ प्रकट हुई है।

भारतीय साहित्य में करुणा को अत्यन्त विशिष्ट स्थान दिया गया है। संस्कृति साहित्य के महान कवि भवभूति तो 'करुणा' को ही एकमात्र रस मानते हैं। यहीं उल्लेखनीय है कि अमरकान्त के पात्र "हालात का शिकार होने के बावजूद अपना धर्म नहीं खोते, वे बेहद मानवीय और संवेदनशील बने रहते हैं।"[2] विपरीत परिस्थितियों में मनुष्य का सहज, सरल रह पाना काफी मुश्किल होता है लेकिन अमरकान्त के पात्र अंत तक अपनी संवेदनशीलता के साथ कथा में विद्यमान रहते हैं। उनकी 'डिप्टी कलक्टरी', 'दोपहर का भोजन', 'जिन्दगी और जोक', 'मौत का नगर', 'असमर्थ हिलता हाथ', 'मकान', 'हत्यारे', 'पलाश के फूल', 'मूस', 'बस्ती', 'लड़की की शादी', 'बउरैया कोदो', 'बहादुर'य मित्र मिलन जैसी कहानियों का मूल्यांकन इतना आसान नहीं इसके लिए नए मानदण्ड बनाने की आवश्यकता है। भाषा की सहज प्रवाहमयता विशेष अर्थ ध्वनित करते ठेठ शब्दों एवं मुहावरों का बड़ा ही सटीक प्रयोग, और लोक जीवन से ग्रहण की गयी व्यंग्यात्मकता अमरकान्त को हिन्दी कथा साहित्य में अलग पहचान दिलाती है। ऐसे में गहन मानवीय अनुभूति, करुणा और संवेदना से लबालब अमरकान्त की कहानियों में भारतीयता को ढूंढने का प्रयास न तो निरर्थक है नही व्यर्थ बल्कि पूरी तरह ये अमरकान्त की कहानियों में अपने सार्थक जीवन सन्दर्भों के साथ सजीव हो उठे हैं। अमरकान्त के शब्द सीधे–सीधे संवेदनाओं से साँस लेते अमरकान्त को प्रेमचन्द की परम्परा का कथाकार कहा जाता है। प्रेमचन्द भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि हैं। वो हिन्दी के प्रतिनिधि कथाकार हैं। उनके वस्तु चयन शिल्प एवं सामाजिक सरोकारों में भारतीयता कूट–कूटकर भरी है। अमरकान्त ने उनकी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए ''नयी कहानी" आन्दोलन के दौर में मानवता के पृथक मानदण्ड स्थापित करते हुए अपनी एक पृथक छवि का निर्माण किया। मोहन, राकेश, कमलेश्वर एवं राजेन्द्र यादव की तरह उस समय इलाहाबाद में भी मार्कण्डेय, अमरकान्त एवं शेखर जोशी की एक तिकड़ी थी जो एक सार्थक लेखन की दिशा में प्रयासरत थी इसमें अमरकान्त का नाम अग्रगण्य था। वो बिना किसी लाग लपेट के, बिना शोर मचाएं पाठकों पर अपनी छाप छोड़ देते थे और उनके चित्त को आकर्षित कर लेते थे।

अमरकान्त जी के निधन पर शेखर जोशी की ये प्रतिक्रिया गौरतलब है–''मार्कण्डेय, अमरकान्त–शेखर"–तीनों नाम एक साथ लिए जाते थे पहले मार्कण्डेय और अब अमरकान्त। सिर्फ शेखर रह गया... ।[3] इस प्रतिक्रिया में सिर्फ अमरकान्त से पिछड़ने का गहरा दुःख और वेदना ही नहीं है बल्कि अकेलेपन की गहरी उद्विग्नता और क्षोभ भी निहित है जिसे वे जीवन के कठिन क्षणों में मार्कण्डेय और अमरकान्त के साथ धकेलकर दूर फेंक आते थे। इसमें अत्यन्त समीपता और आत्मीयता का आभास भी है जो आज हमारी बदलती जीवन शैली में स्खलित होता जा रहा है।

रवीन्द्र कालिया और दूधनाथ सिंह जैसे कथाकारों ने अमरकान्त को प्रेमचन्द के बाद 'सबसे सक्षम रचनाकार' कहा है, काशीनाथ सिंह कहते हैं कि ''अमरकान्त सभी बातों को ध्यान से सुनते थे। अमरकान्त जी बहुत सहज और सरल थे। लुंगी, पैजामा और गंजी में सबके लिए उपलब्ध थे। भोजपुरी से गहरा लगाव था। जब भी बात करते, भोजपुरी उनकी जुबान पर आ ही जीती उनको देखकर प्रेमचन्द की याद आ जाती थी''।[4] अमरकान्त की सरलता, सहजता और उनका देसी पहनावा उन्हें पूरी तरह भारतीयता से जोड़ता है। उनकी कहानियों में निहित भारतीय तत्वों की खोज करते हुए हमारा ध्यान स्वाभाविक रूप से उस भारतीय कथा पद्धति की ओर जाता है जिसका सम्बन्ध पंचतंत्र, कथासरित्सागर और हितोपदेश जैसी रचनाओं के शिल्प तथा उनकी बनावट से है।

हालांकि अमरकान्त ने कहीं–कहीं पाश्चात्य पद्धति का भी सहारा लिया है पर फिर भी प्रमुखता भारतीय पद्धति को ही दी है। जो विषय अन्य कथाकारों को बकवास और अनुपयुक्त लगते थे उन्हे भी अमरकान्त ने अपनी लेखनी के स्पर्श से कहानी शिल्प में ढालकर अत्यन्त प्रासंगिक बना दिया है। ''अमरकान्त की कहानियां एक विशेष अर्थ में भारतीय हैं वे सामान्य भारतीय व्यक्ति के संस्कारों भावनाओं और भावुकता को भी व्यक्त करती हैं तथा उनके साथ जो पिछड़ापन अन्धविश्वास और पाखण्ड जुड़ा है उन्हें भी विडम्बनात्मक ढंग से उजागर करती चलती हैं।"[5]

प्रेमचन्द की तरह ही अमरकान्त ने भी सरल सुबोध अर्थात बोधगम्य शैली में लेखन किया है। अमरकान्त जी साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित है। आज के नगरीय और ग्रामीण जीवन पाने वाली सतही सहानुभूति, आन्तरिक ईर्ष्या, स्वार्थपरकता, जीवन की कृत्रिमता आदि की अभिव्यक्ति अमरकान्त जी

की कहानियों में देखी जा सकती है। "भैरव प्रसाद गुप्त" ने आपके यथार्थ बोध को रेखाकिंत करते हुए लिखा है कि– "अमरकान्त की कहानियों का निर्माण जीवन्त वस्तु शिला पर होता है इसलिए वे पत्थर की तरह ठोस व कंक्रीट की तरह शक्ति सम्पन्न होती है"।[6]

अमरकान्त के हृदय में एक संवेदनशील आत्मा निवास करती है जिसकी संवेदनशीलता दूसरों को भी प्रभावित करती है। वो हमेशा अपनी रचना धर्मिता को प्रति लेखक को सजग, सतर्क और ईमानदार रहने को सलाह देते हैं उनके अनुसार "लेखक को न तो विपरीत परिस्थितियों से घबराना चाहिए, न ही आलोचना से दुःखी होना चाहिए। लेखन के प्रति समर्पण ही रचनाकार को स्वीकार्यता दिलाता है।"[7] जीवन भर लेखन के लिए संघर्ष करने वाले अमरकान्त जनसाधारण की मनःस्थितियों से भली भाँति परिचित थे और उनकी गहराई को बड़ी बारीकी से समझते थे। जनसामान्य से उनका जुड़ाव कितना गहरा था। इसका प्रमाण 'डिप्टी कलक्टरी' में देखने को मिलता है जिसमें उन्होंने स्वाधीनता को बाद बन रहे भारत की वास्तविकता को उजागर करने का प्रयास किया है।

प्रेमचन्द एक स्थान पर लिखते हैं कि "कहानी का आधार अब घटना नहीं, अनुभूति है। आज लेखक केवल कोई रोचक दृश्य देखकर कहानी लिखने नहीं बैठ जाता। उसका उद्देश्य स्थूल सौन्दर्य नहीं हैं। वह तो कोई ऐसी प्ररेणा चाहता है, जिसमें सौन्दर्य की झलक हो और जिसके द्वारा वह पाठक की सुन्दर भावनाओं को स्पर्श कर सके।"[8] अमरकान्त ने भारतीय कथा साहित्य की उस विशेषता को अपनाया है जिसमें मनोरंजन के साथ–साथ एक संदेश भी छिपा होता है। वो अपनी कहानियों के जरिए सीधे–सीधे पाठकों से संवाद करते नजर आते हैं, आप बीती सुनाते नजर आते हैं। इन सन्दर्भ में उनकी "लोक–परलोक" कहानी को उद्धृत किया जा सकता है। स्वतंत्रता के पश्चात् देश में विकास के नाम पर शोषण करने वाले ठेकेदारों की तरह जिस प्रकार के पात्रों का उदय हुआ उस यथार्थ को ये कहानी पूरी प्रामाणिकता के साथ उजागर करती है।

अमरकान्त ने आपनी कहानी 'श्वानगाथा' में भारतीय समाज में प्रचलित गाथाओं के समान की संवाद या कथन पद्धति का सहारा लिया है। इनकी कहानियों की विशेषताये है कि वो साधारण शब्दों में बड़ी बात कह जाते है। शब्दों की सादगी एवं भाषा की सरलता से खेलना उन्हें अच्छी तरह से आता था। अमरकान्त ने उस कथन को चरितार्थ कर दिया जिसमें प्रेमचन्द ने कहा था कि "'अब यथार्थ चित्रण के बिना कहानी नहीं लिखी जा सकती"।[9] यथार्थ, कल्पना और अनुभूति का संयोग उनकी कहानियों को विश्वसनीय, संप्रेष्य एवं कलात्मक और अनुभूति का संयोग उनकी कहानियों को विश्वसनीय, संप्रेष्य एवं कलात्मक रुप प्रदान करता है। अमरकान्त अपनी कल्पनाशीलता और लेखन कौशल के जरिए पात्रों के मनोभावों तक पहुँचने की कोशिश करते हैं। अमरकान्त ने कहानी लेखन की शुरुआत आजादी के बाद से की। ये वो समय था जब हिन्दी कहानी की एक धारा प्रेमचंद की परंपरा से अलग हटकर मनोवैज्ञानिक अवधारणा को केन्द्र में रखने लगी थी। कहानी के पुराने कथ्य और शिल्प में अब नयी कहानी उन पुरानी वर्जनाओं को स्वीकार नहीं करना चाहती थी जो उसकी स्वच्छंदता का ही हनन कर ले।

'उपेन्द्रनाथ अश्क' ने लिखा है कि "जब पुरानी कहानी के आदर्श पात्र और उनकी स्थितियां जीवन में नहीं दृष्टिगोचर हुई तो वैसी कहानियों से वितृष्णा होने लगी। लेखक के साथ–साथ पाठक भी कहानी से मनोरंजन की अपेक्षा कुछ अधिक की मांग करने लगे। तब गढ़े गढ़ाए काल्पनिक कथानकों का जादू टोना, कथाकार ने बदलजे जीवन के तकाजे को मान, पहले निर्वैयक्तिक यथार्थवादी दृष्टि से मानव और समाज को देखा और ऐसी कहानियां लिखी जो जीवन की जीती जागती, उसकी गति से स्पंदित खण्ड मात्र दिखायी देती थी।"[10]

अमरकान्त ने सन् 1942 के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' को बहुत नजदीक से देखा था। वो राष्ट्रीय आन्दोलन के उद्देश्यों से भली भाँति परिचित थे। किन्तु वो ये भी जानते थे कि अजादी के बाद जो यथार्थ उभरकर सामने आया वह राष्ट्रीय आन्दोलन के सपनों, आदर्शों एवं उद्देश्यों के अनुरूप बिल्कुल नहीं था। इन परिस्थितियों ने अपरकान्त सहित तमाम कहानीकारों को सोचने पर विवश कर दिया। ऐसे में "नए कथाकारों ने अपना सम्बन्ध सीधे प्रेमचंद की उन कहानियों से जोड़ा जिनकी रचना उन्होंने अंतिम दिनों में की थी और जिनमें 'पूस की रात' 'कफन' 'शतरंज के खिलाड़ी' मुख्य हैं। इन कहानियों

में प्रेमचन्द यथार्थ के अधिक निकट हैं और अपने पूर्ववर्ती आदर्शवादी दृष्टिकोण को नकारते हुए से लगते हैं''।[11]

परिवेश में परिवर्तन के साथ–साथ रचना की अन्तर्वस्तु एवं प्रविधि में परिवर्तन आवश्यक होता है। अमरकान्त ने अपनी लेखनी को, अपने परिवेश के सांचे में ढालकर ही शब्दों से रंजित किया जिसके कारण उनके साथ–साथ पूरा युग ही व्यंजित हो उठा। नयी कहानी आन्दोलन तथा अमरकान्त की रचनात्मक क्षमता के विकास के सन्दर्भ में 'कहानी' पत्रिका के योगदान को तो भुलाया ही नहीं जा सकता। इस पत्रिका के नवम्बर 1954 और जनवरी 1956 के विशेषांकों में अमरकान्त की कहानियो 'दोपहर का भोजन' एवं 'डिप्टी कलक्टरी' का प्रकाशन हुआ था जिसने तत्कालीन साहित्य जगत में काफी ख्याति अर्जित की और चर्चा का विषय बन गयी थी और आज भी नयी कहानी की कोई भी बहस इन कहानियों की चर्चा के बिना पूरी नहीं होती। इन कहानियों में जीवन को बदलते सन्दर्भों में देखने की जो अभूतपूर्व कोशिश हुई है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। अमरकान्त ने यथार्थ की बदलती परिभाषा के आइने में कल्पनाशीलता एवं भावात्मकता का सटीक और सफल प्रयोग किया है। समाज की सच्चाइयों को व्यक्त करने में अमरकान्त ने विशेष सफलता पायी है। जिसमें उनकी भाषा की सफलता और सहजता से खासी भूमिका का निर्वहन किया है। ''हिन्दी साहित्य में जिस भाषा का प्रयोग प्रेमचन्द ने किया, उसका विकास कहानी में सिर्फ दो लेखकों में हुआ वो हैं अमरकान्त और शेखर जोशी। इन दोनो कहानीकारों की भाषा जिन्दगी के आस–पास की भाषा है। इन कहानीकारों की भाषा में न कोई बनावट है और न ही शब्दों को गढ़ने का प्रयास है।''[12]

वास्तविकता तो ये है कि भाषा जैसी हो, महत्पवूर्ण बात है 'कहने का सलीका'। अमरकान्त की कहानियां इसका बड़ा उदाहरण हैं। ''श्यामसुन्दर दास'' ने ठीक ही लिखा है है कि ''भाषा विचार का साधन है, भाषा का इस्तेमाल लापरवाही से करने का मतलब, विचार से लापरवाही करना।''[13] भाषा का सशक्त, सुन्दर सतर्क और सटीक प्रयोग किसी भी रचना को सुदृढ़ आधारशिला प्रदान करता है। अगर कथ्य सशक्त हो तो साधारण से साधारण भाषा के प्रयोग से भी कहानी को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। वातावरण का निर्माण करने के लिए अमरकान्त ने कहीं–कहीं चित्रमयी भाषा का प्रयोग किया है जो छायावादी चित्रमयता एवं प्रयोगवादी विम्बात्मकता से भिन्न है। कहीं वो व्यंग्य का प्रयोग करते हुए भाषा को अधिक धारदार और नुकीली बनाने की कोशिश करते नजर आते हैं जो कहीं बातचीत के लहजे में कहानी की स्वच्छंदता को बनाए रखने की अपील करते नजर आते हैं।

अमरकान्त जब अपनी कहानियों की भाषा में नाटकीयता का समावेश करते हैं तो उसका सौन्दर्य निखरकर और अधिक प्रभावशाली हो जाता है। इस संदर्भ में 'डिप्टी कलक्टरी' में वो कहते हैं– ''अन्त में वो जैसे सांस रोककर धीरे–धीरे इस तरह उठने लगे जैसे कुछ खोजने आये हैं। लेकिन उसमें असफल होकर चुपचाप वापस लौट रहे हों।''[14] अमरकान्त अपने कथानकों के लिए जब भाषा का चयन करते हैं तो ऐसा लगता है कि वो उसे एक सर्जनात्मक परिवेश में गढ़ कर लाए हों। उनकी भाषा प्रचलित और पुराने वाक्य विन्यास को नयी अर्थवत्ता प्रदान कर उसे नया जीवन देती है। उन्होंने भाषा का प्रयोग चमत्कार के लिए नहीं किया अपितु साधारण जन की पीड़ा को समझने के लिए किया है। अमरकान्त भाषा में भी संवेदना को इस तरह पिरो दिया है कि वो अत्यन्त सारगर्भित प्रतीत होने लगती है। अमरकान्त ने अपनी कहानियों में जनसाधारण की भाषा का प्रयोग किया जो लोकजीवन से जुड़ी है। वो सामान्य मुहावरों से भी गम्भीर अर्थ का बोध करा देते हैं। व्यंग्य की प्रचुरता के बावजूद अमरकान्त की भाषा कहीं अवरुद्ध नहीं होती बल्कि उसमें नैसर्गिक प्रवाह बना रहता है।

ये कहना गलत नहीं होगा कि व्यंग्य का जैसा धारदार प्रयोग अमरकान्त ने किया है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। भाषा भेद को बहुत हद तक मिटा दिया है। इस प्रकार अमरकान्त ने कथ्य और शिल्प के स्तर पर जो राह चुनी वह पूर्णतः भारतीय है। यही कारण है कि उनकी कहानियां वृहत्तर पाठक समुदाय की अपनी सी लगने लगती है।

सन्दर्भ

1. डॉ० विजयमोहन : कथा समय, पृ०–30.
2. महेश दर्पण : आजकल, अप्रैल 2014, पृ० 7.

3. डॉ० काशीनाथ सिंह : हिन्दुस्तान 18 फरवरी 2014
4. डॉ० विजय मोहन : कथा समय, पृ० 30.
5. प्रेमचन्द : कुछ विचार, पृ०–41.
6. डॉ० देवी सिंह अवस्थी : नयी कहानी : सन्दर्भ और प्रकृति, पृ० 50.
7. डॉ० बलराज पाण्डेय : कहानी आन्दोलन की भूमिका, पृ० 41.
8. वही पृ० 42.
9. डॉ० देवीशंकर अवस्थी : नयी कहानीः सन्दर्भ और प्रकृति पृ०–50.
10. डॉ० बलराज पाण्डेय : कहानी आन्दोलन की भूमिका, पृ० 41.
11. वही पृ०–42.
12. वही पृ० 169.
13. डॉ० श्याम सुन्दर दास : साहित्यालोचन, पृ०–259.
14. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियां खण्ड एक, पृ० 57.

❐❐❐

RESEARCH INQUIRY